शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
पीअर रीव्यूड रेफ़्रीड रिसर्च जर्नल
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2024

प्राचीन भारत में इतिहास लेखन : एक अध्ययन

मनोज सिंह (शोधार्थी)
डॉ.ए.एस. नरवरिया
इतिहास विभाग
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
मुरैना, मध्यप्रदेश,भारत

शोध संक्षेप

भारतीय सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक रही है, इसे चीन एवं यूनान की सभ्यताओं की तुलना में अधिक प्राचीन माना जाता है। प्राचीन समय से भारत को कई बार उत्थान और पतन का सामना करना पड़ा, इसलिए प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में कई बड़े अंतराल दिखाई पड़ते हैं। इस कारण प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन गहन अनुसंधान का विषय है। प्राचीन भारत में इतिहास लेखन समकालीन इतिहास लेखन की दृष्टि से पूर्णता भिन्न था। इसलिए कुछ इतिहासकारों ने भारत को इतिहास लेखन से अपरिचित बतलाया है, जो तर्क संगत नहीं है। भारत के संदर्भ में कहा जाता है कि प्राचीन यूनान, रोम और चीन की अपेक्षा प्राचीन भारत में इतिहास बोध का अभाव था। विद्वानों का एक वर्ग है मानता है कि प्राचीन भारतीयों में इतिहास लेखन का अभाव था। इस प्रकार की सोच रखने वाले विद्वानों में विंटरनिटज, मैक्समूलर, डॉ. हीरानंद शास्त्री आदि का नाम उल्लेखनीय है। इस मान्यता के विपरीत विद्वानों का एक वर्ग जिसमें नीलकंठ शास्त्री, डॉ. वी.एस. पाठक, डॉ. गोविंदचंद्र पांडेय आदि ने अपनी लेखनी के माध्यम से प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि भारतीय भी इतिहास लेखन की कला से परिचित थे। हम यह मान सकते हैं कि प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में अनेक समस्या जैसे कालक्रम, व्यक्ति, स्थान, घटना आदि विद्यमान थी, फिर भी प्राचीन भारतीय इतिहासकारों ने इतिहास लेखन की दिशा में निरंतर प्रयास जारी रखा। प्राचीन भारत में इतिहास लेखन हेतु विशाल ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध रही, जिसका भारतीय विद्वानों ने समय-समय पर उपयोग किया।

कुंजी शब्द : *इतिहास लेखन परंपरा, वैदिक साहित्य, प्राचीन भारतीय इतिहास।*

प्रस्तावना

इतिहास एक ऐसा विषय है, जिसे सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता है। ऐसा कोई विषय नहीं है, जिसका इतिहास से संबंध न रहा हो। पृथ्वी पर जो भी घटित हुआ एवं जो भी घटित हो रहा है वह सब इतिहास ही है। जब से मनुष्य चेतनाशील हुआ है, वह अपने अतीत में दिलचस्पी लेने लगा है।[1] मानव की अतीत के प्रति जिज्ञासा एवं जागृति की प्रवृत्ति ने उसे अतीत का अध्ययन एवं जानकारी हेतु प्रेरित किया। प्राचीन भारत में इतिहास लेखन परंपरा के संदर्भ में पश्चात विद्वानों का मत रहा है कि प्राचीन भारतीय मनीषी इतिहास लेखन के प्रति उदासीन थे। लावेश डिकिंसन ने भारतीयों के संदर्भ में यहां तक कहा है कि हिंदू इतिहासकार नहीं थे।[2] डॉ. गोविंद चंद पांडेय ने भारतीयों में इतिहास लेखन के ज्ञान का अभाव के मत का खंडन करते हुए लिखा है कि "भारतीयों ने जीवन को कभी भी नगण्य नहीं माना। यदि इतिहास

कर्म प्रधान रहा है तो भारतवर्ष सदैव महापुरुषों की कर्मभूमि रहा है।[3]

इतिहास शब्द की उत्पत्ति इतिह्आस इन तीन शब्दों से मानी गई है जिसका अर्थ है निश्चित रूप से ऐसा हुआ। आचार्य दुर्गा ने अपनी निरुक्त भाष्य वृति में इतिहास की व्याख्या करते हुए लिखा है :

इति हैवमसिदिति यत कथ्यते तत इतिहास।[4]

अर्थात यह निश्चित रूप से इस प्रकार हुआ था, यही इतिहास है। हिस्ट्री शब्द की उत्पत्ति जर्मन शब्द गेशिचाते से मानी जाती है, जिसका अर्थ है विगत घटनाओं का विशेष एवं बोध्य गम्य विवरण।[5] हेरोडोटस ने इतिहास के लिए पहली बार हिस्ट्री शब्द का प्रयोग किया है। ग्रीक भाषा का 'हिस्टोरे' शब्द इतिहासकार के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो वाद-विवाद का निर्णय करने में समर्थ होता था।[6] अर्थात वह इतिहास का अच्छा ज्ञात होता था। सामान्यतः अतीत की घटनाओं के क्रमबद्ध अध्ययन को इतिहास माना जाता रहा है। जेम्स शटवेल महोदय ने स्पष्ट किया है कि 'घटनाएं इतिहास नहीं होती बल्कि इनका लेखा-जोखा इतिहास होता है।'[7]

एक इतिहासकार का लक्ष्य सामाजिक रुचि तथा आवश्यकतानुसार अतीत की घटनाओं को व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध रूप से वास्तविक स्वरूप में प्रस्तुत करना होता है। इतिहासकार के गुणों के संबंध में डॉ. झारखंड चौबे लिखते हैं इतिहासकार का लक्ष्य अतीत तथा वर्तमान के मध्य एक ऐसे सेतु का निर्माण करना है, जिसके माध्यम से वह समसामयिक समाज को अतीत का अवलोकन कराकर अतीत के द्वारा वर्तमान को प्रशिक्षित तथा भविष्य को मार्गदर्शित कर सके।[8]

वैदिक साहित्य

इतिहास शब्द का प्रयोग हमें प्राचीन भारतीय ग्रंथों में मिलता है। इतिहास शब्द का विश्व में प्राचीनतम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है :

स वृहति दिशानुव्यचल
ताम इतिहासशच पुराण च गाथाश्च
नाराशंसी चनुव्याचल।[9]

अर्थात महान लक्ष्य की और गतिशील राष्ट्र का अनुसरण इतिहास, पुराण, गाथा तथा नरशांसी करते हैं। प्राचीन भारत में ज्ञान की शाखाओं में इतिहास, पुराण का अध्ययन होता था।[10] अथर्ववेद में उल्लेखित है कि सृष्टि के आरंभ में जो परम पुरुष उत्पन्न हुआ उसका अनुगमन इतिहास, पुराण, गाथाओं और नराशांसियों ने किया। इस तत्व को समझने वाले विद्वान के व्यक्तित्व में इतिहास, पुराण, गाथा एवं नाराशंसी का ज्ञान निहित होता है।[11] वर्तमान समय में इतिहास, पुराण, गाथा एवं नाराशंसी का आधुनिक इतिहास के अर्थ एवं व्याख्या में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

इतिहास का अर्थ इतिवृत्त है अर्थात जो पहले होता आया है। पुराण इतिहास की पुनर्व्याख्या है। गाथा इतिहास से निकला हुआ निष्कर्ष है। यह गाथा लोक-विश्वास में संचित और सुरक्षित रहती है। नाराशंसी उन मनुष्यों की प्रशंसा है जो इतिहास, पुराण, गाथा में नायक के रूप में उल्लिखित हुए हैं।[12] इस प्रकार इतिहास, पुराण, गाथा तथा नराशंसी इन चारों को मिलकर भारतीय परंपरा में ऐतिहासिकता की अवधारणा स्वीकार की जाती है।

अथर्ववेद में इतिहास, पुराण को महाभूत (परमपुरुष) से ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद के साथ ही निकला हुआ अभिव्यक्त किया है।[13] इसलिए इतिहास और पुराण को मिलाकर चार वेदों के साथ पांचवा वेद मानने की परंपरा

स्थापित हुई। इतिहास पुराण का संबंध मानव-समाज के विवरण से है, परंतु इन्हें वेद की तरह मानने का अर्थ है कि वेद की भांति यह भी अनादि है। इस प्रकार इतिहास पुराण अनादि है तो इसमें वर्जित मानव का चरित्र भी अनादि है। इतिहास, पुराण तथा आख्यान (इन तीनों की विभाजन रेखाएं बड़ी सूक्ष्म है) को एक-दूसरे के पर्याय के रूप में भी स्वीकार किया गया है। वात्सायन ने न्यायशास्त्र में व्यक्त किया है कि इतिहास और पुराण दोनों का विषय लोकवृत्त है। छांदोग्य उपनिषद में इतिहास पुराण को पंचम वेद कहा गया है। साथ ही आख्यान को भी पंचम वेद मानकर इतिहास पुराण के साम्य स्वीकार किया गया है। पंचम वेद का अध्ययन-अध्यापन उतना ही अनिवार्य था जितना वेदों का अध्ययन अध्यापन। पर्जिटर महोदय ने अपने ग्रंथों में भारत के प्राचीनतम इतिहास के लिए पुराणों को वैदिक साहित्य से कहीं अधिक महत्व प्रदान किया है।[14] पर्जिटर के इस मत का समर्थन बर्नेट महोदय ने भी किया है।

रामायण और महाभारत दोनों महाकाव्यों के लिए भी इतिहास के साथ-साथ 'आख्यान' की संज्ञा का प्रयोग अनेक बार हुआ है। महाभारत में आख्यान नामक पंचम वेद का उल्लेख वन पर्व, द्रोण पर्व, कर्ण पर्व आदि स्थानों पर हुआ है। यास्क ने वेद के कुछ सूक्त को इतिहास या आख्यान के रूप में परिभाषित किया है।

ब्राह्मण ग्रंथों में शुन:शेप के प्रसंग को आख्यान माना गया है। वस्तुतः शुन:शेप का विवरण तत्कालीन समय की ऐतिहासिक घटना है। इस प्रकार के आख्यानों का गायन अश्वमेघ तथा राजसूय यज्ञों के अवसर पर किया जाता था। जातीय स्मृति के रूप में इतिहास को संचित और सुरक्षित रखने की प्रवृत्ति का उदय वैदिक काल में हो चुका था।[15] संहिताओं की अतिरिक्त आख्यान, उपाख्यान आदि के रूप में लोकप्रिय साहित्य वाचिक परंपरा में विकसित हो रहा था। यज्ञिक अनुष्ठानों में इन आख्यानए उपाख्यानों को कभी गद्य में तो कभी कथा गायन की पद्धति में प्रस्तुत किया जाता रहा है।

यजुर्वेद की ऋचाओं में यज्ञ के अवसर पर अनिवार्यत: आमंत्रित व्यक्तियों की सूची में सूत और सैलूश का नाम सर्वप्रथम है। इन्हीं से चरणों, भाटों का समाज विकसित होने लगा, जो प्राचीन घटनाओं को लोगों के समक्ष गायन के रूप में प्रस्तुत करता था। रामायण में कुशिल्वों का उल्लेख है, जो जनता के बीच प्राचीन कथाएं गायन पद्धति से सुनाया करते थे। महाभारत में सुत, मगध, बंदी, भाट, ग्रंथिक भी सामान्य जन के समक्ष गाथा गायन का कार्य करते थे।[16]

शतपथ ब्राह्मण में वैदिक यज्ञ के अनुष्ठान में 'परिप्लवान आख्यान' का वर्णन है। वैदिककालीन लोकप्रिय आख्यानों में देवासुर संग्राम, अमृत मंथन, त्रिपूर्ववध, प्रलय की कथा आदि का वर्णन है। वैदिक साहित्य इतिहास बोध की अपेक्षा जातीय स्मृति अधिक है। इतिहास को कथा के रूप में ढाल कर जीवित रखने की प्रवृत्ति इन आख्यानों से प्रकट होती है।

ऋग्वेद विश्व साहित्य की सबसे प्राचीन पुस्तक और आर्यों का आदि ग्रंथ होने के साथ-साथ अपने समय का ऐतिहासिक दस्तावेज भी है।[17] इसमें भारतवंशी राजा सुदास का पुरोहित बनने के लिए विश्वामित्र तथा वशिष्ठ के मध्य द्वेष भाव का भी उल्लेख है। इस द्वेष भाव में वशिष्ठ कुल विजयी रहा, परंतु भारतों के युद्ध विजय कर वापसी में बिपाशा और शताद्रु के संगम पर उफनती नदियों को पार करने में उन्हें विश्वामित्र से सहायता प्राप्त हुई थी। दस राजाओं पर विजय

प्राप्त कर भरतवंशी राजा सुदास दसराज कहलाए। दासराज युद्ध का आंखों देखा वर्णन ऋग्वेद के सातवे मंडल के अठाहरवें सूक्त में वर्णित है। इस प्रकार ऋग्वेद के समय से चली आ रही इतिहास की यह परंपरा आख्यान-उपाख्यानों आदि के रूप में संवर्धित होने लगी। आख्यान-उपाख्यानों की संचित सामग्री को कुछ लोकप्रिय विधाओं के साथ मिलकर इतिहास नाम दिया गया और इसे अध्ययन-अध्यापन के अनिवार्य विषय के रूप में सम्मिलित किया गया।

महाकाव्य

प्राचीन धार्मिक ग्रंथो में रामायण एवं महाभारत दो महाकाव्यों का भी वर्णन मिलता है। इन महाकाव्यों में इतिहास लेखन हेतु महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। रामायण में प्राचीन राजतंत्रात्मक व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, दक्षिण की ओर भारत का विस्तार आदि का वर्णन मिलता है। महाभारत में उत्तर वैदिक काल की विभिन्न स्थितियों का उल्लेख मिलता है। रामायण और महाभारत दोनों महाकाव्यों के लिए भी इतिहास के साथ-साथ 'आख्यान' की संज्ञा का प्रयोग अनेक बार हुआ है। महाभारत में आख्यान नमक पंचम वेद का उल्लेख वन पर्व, द्रोण पर्व, कर्ण पर्व आदि स्थानों पर हुआ है। यास्क ने वेद के कुछ सूक्त को इतिहास या आख्यान के रूप में परिभाषित किया है।

बुद्ध एवं जैन ग्रंथ

प्राचीन भारत में इतिहास लेखन की परंपरा का महत्वपूर्ण साक्ष्य बौद्ध एवं जैन साहित्य से प्राप्त होता है। पाली बौद्ध सहित के प्रमुख ग्रंथों में त्रिपिटक एवं जातक ग्रंथ आते हैं। त्रिपिटक के तीन भाग हैं : सुत्तपिटक, विनयपिटक, अभिधम्मपिटक। जातक ग्रंथों में महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों का वर्णन मिलता है। इसके साथ ही बौद्ध ग्रंथ, दीपवंश, महावंश एवं मिलिंदपन्हो के वर्णन से तत्कालीन इतिहास को जानने की ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त होती है। बौद्ध धर्म के संस्कृत ग्रंथों में दिव्यावदान और ललितविस्तर का महत्वपूर्ण स्थान है। दिव्यावदान में परवर्ती मौर्य शासको तथा शुंग शासक पुष्यमित्र का उल्लेख मिलता है तथा ललित विस्तार महायान मत से संबंधित प्राचीनतम ग्रंथों में से एक है। इन ग्रंथो का ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्व है और यह तत्कालीन इतिहास को जानने के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। जैन धर्म के प्रमुख ग्रंथ भद्रबाहु चरित्रए परिशिष्ट पर्व, कथा कोश, भगवती सूत्र आदि से प्राचीन भारत में इतिहास लेखन की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। बौद्ध एवं जैन साहित्य केवल धार्मिक साहित्य नहीं है, बल्कि इन ग्रंथों से महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध होती है। प्राचीन इतिहास लेखन की परंपरा में इन ग्रंथों का योगदान अविस्मरणीय है।

ऐतिहासिक ग्रंथ

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में धार्मिक साहित्य के साथ-साथ अनेक ऐसे ग्रंथ भी प्राप्त होते हैं, जिनका ऐतिहासिक दृष्टि से तथा तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन की जानकारी की दृष्टि से विशेष महत्व है। इन ग्रंथो में अर्थशास्त्रए हर्षचरित, राजतरंगिणी प्रमुख हैं।

अर्थशास्त्र

यह मौर्य काल की रचना है। इसमें चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री कौटिल्य (चाणक्य) के विचार प्रस्तुत किए गए हैं। अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण है। इस ग्रंथ में श्लोकों की संख्या चार हजार बताई गई है। इस ग्रंथ के

प्रथम अधिकरण में राजस्व संबंधी विषयों तथा द्वितीय अधिकरण में नागरिक प्रशासन का वर्णन मिलता है। तीसरे एवं चौथे अधिकरण में दीवानी और फौजदारी कानून का उल्लेख मिलता है। पांचवें अधिकरण में सम्राट के सभासदों एवं अनुचरों के कर्तव्यों एवं दायित्वों का उल्लेख मिलता है। छठे अधिकरण में राज्य के सप्तांग सिद्धांतों का वर्णन मिलता है। अंतिम नौ अधिकरण राजा की विदेश नीति, सैनिक अभियान, युद्ध में विजय के उपाय, शत्रु देश में लोकप्रियता प्राप्त करने के उपाय, युद्ध तथा संधि के अवसर आदि विषयों का अर्थशास्त्र में वर्णन मिलता है।

कौटिल्य के द्वारा नंदों का विनाश एक ऐसी ऐतिहासिक परंपरा है, जिसकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते। अर्थशास्त्र चंद्रगुप्त मौर्य के शासन व्यवस्था की जानकारी के लिए बहुमूल्य सामग्री का भंडार है। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में प्राचीन भारत के प्रमुख विद्वान मनु, बृहस्पति, नारद, भीष्म, भारद्वाज, आदि का उल्लेख किया है। जिन्होंने तत्कालीन भारतीय राजनीतिक व्यवस्था पर महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे थे। अर्थशास्त्र के अंत में कहा गया है :

येन शस्त्र च शास्त्र च नंदराजगता च भू:।
अमर्षेणोंद्धतान्याशु तेन शास्त्रमिंड कृतम।।[19]

अर्थात इस ग्रंथ की रचना उस व्यक्ति ने की है, जिसने क्रोध के वशीभूत होकर शस्त्र, शास्त्र तथा नंदराज के हाथ में गई हुई पृथ्वी का शीघ्र उद्धार किया।

अर्थशास्त्र वास्तविक रूप में ऐतिहासिक सामग्री का अमूल भंडार है, जिसमें कौटिल्य ने अपने समय की महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करते हुए उनका विश्लेषण भी किया है।

हर्षचरित

बाणभट्ट के द्वारा लिखित हर्षचरित प्रथम भारतीय कृति है जिसे ऐतिहासिक माना जा सकता है।[20] यह कृति आठ अध्यायों में विभक्त है। इसमें केवल हर्ष के शासन के प्रथम वर्ष की ही जानकारी प्राप्त होती है। इस पुस्तक का मुख्य विषय कन्नौज के मौखरी साम्राज्य पर शत्रुओं के द्वारा किया गया आक्रमण था। जिसके फलस्वरूप मौखरी शासक ग्रहवर्मा की हत्या हो जाती है। हर्ष अपनी सेना के साथ शत्रुओं के विरुद्ध अभियान करता है। हर्ष और उसकी बहन राजश्री के मिलन के साथ हर्ष चरित्र समाप्त हो जाता है। हर्षचरित के संबंध में वी.एस. पाठक तर्क देते हैं कि हर्षचरित एक अपूर्व कृति नहीं हैं, बल्कि पूर्ण रचना हैं। जिसे बाण ने स्वयं हर्ष और राजश्री की भेंट से आगे कभी नहीं लिखना चाह तथा उसका सारा प्रयास वस्तुतः इसी साध्य को प्राप्त करने पर केंद्रित था।[21] बाणभट्ट ने हर्षचरित्र में हर्षकालीन राजनीतिक स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इस कारण बाणभट्ट को प्राचीन भारत के इतिहासकार के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

राजतरंगिणी

कल्हण को निर्विवाद रूप से प्राचीन भारत का एक प्रमुख इतिहासकार स्वीकार किया गया है। इसकी प्रसिद्ध कृति राजतरंगिणी (राजाओं की नदी) में आठ हजार छंदबद्ध पदों का लंबा संस्कृत काव्य वृत्तान्त हैं, जो आठ सर्गो में विभक्त है और प्रत्येक सर्ग को लेखक ने एक तरंग या लहर की संज्ञा दी है। इस कृति में पौराणिक काल से लेकर बारहवीं शताब्दी तक के कश्मीर के राजाओं का इतिहास मिलता है। राजतरंगिणी अब तक उपलब्ध एकमात्र संस्कृत रचना है, जिसे एक इतिहास माना जा सकता है और कश्मीर भारत का एकमात्र क्षेत्र है जहां

ऐतिहासिक लेखन की परंपरा विद्यमान थी।[22] कल्हण प्राचीन भारतीय इतिहास का प्रथम इतिहासकार था जिसने आधुनिक इतिहास लेखन पद्धति के आधार पर राजतरंगिणी की रचना की थी। कल्हण ने घटनाओं के संबंध में अपना दृष्टिकोण भी इस पुस्तक में वर्णित किया। कल्हण ने केवल अपने पूर्वगामी इतिहास लेखकों की ग्यारह पुस्तकों का ही अध्ययन नहीं किया, अपितु उनकी गलतियों को सुधारने का प्रयास भी किया है।[23] साहित्यिक स्रोतों की सत्यता को जांचने के लिए कल्हण ने धार्मिक प्रतिष्ठानों और भूमि अनुदानों एवं अन्य विशेषाधिकारों से संबंधित शिलालेखों, अध्यादेशों, प्रशस्तियों, लेख, सिक्कों तथा प्राचीन स्मारकों जैसे अधिक मौलिक व आधिकारिक स्रोतों का प्रयोग किया। आर.सी.मजूमदार यह टिप्पणी करते हैं कि "राजतरंगिणी प्राचीन भारतीयों द्वारा प्राप्त ऐतिहासिक ज्ञान की उच्चतम सीमा को दर्शाती है।"[24]

इतिहास लेखन को आरंभ में केवल पाश्चात्य विद्वानों से ही संबद्ध किया जाता था। जबकि भारतीय विद्वानों के विषय में यह भ्रांति थी कि उनके पास ऐतिहासिक दृष्टि नहीं है। पौराणिक कथाओं के प्रमाण से उन्हें अत्यधिक काल्पनिक एवं तिथिक्रम ज्ञान रहित इतिहासकार माना जाता था। लवेश डिकिंसन ने भारतीयों के विषय में स्पष्ट कहा हैं कि "हिंदू इतिहासकार नहीं थे।"[25] ए.वी. कीथ महोदय लिखते हैं कि "संस्कृत साहित्य के संपूर्ण महान काल में एक भी ऐसा लेखक नहीं है, जिसे गंभीरता के साथ आलोचनात्मक इतिहासकार के रूप में मान्यता दी जा सके।[26] इन विचारों को कदापि स्वीकारा नहीं जा सकता, क्योंकि प्राचीन भारत में इतिहास लेखन हेतु विशाल ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध थी, जिसका भारतीय विद्वानों ने समय-समय पर उपयोग किया। प्रोफेसर हार्डर का कथन है कि "जो कुछ इस समय में प्रकाश में आया, इतिहास लेखन की दृष्टि से भारतीय भाषा में अत्यंत सीमित उपलब्धि कही जा सकती है, परंतु अज्ञात रूप से पांडुलिपियों के रूप में बहुत-सी सामग्री इधर-उधर छिपी पड़ी है।"[27]

प्राचीन भारत में इतिहास लेखन के प्रारंभिक साक्ष्य वैदिक साहित्य के वंश और गोत्र प्रवर तालिकाओं से मिलती है। वेद, पुराण, महाकाव्यों (रामायण तथा महाभारत), चरित्र परंपरा, बौद्ध व जैन साहित्य आदि से महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त होती है। इन ग्रंथो में सामाजिक परिवर्तन से संबंधित पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है। इनमें समाज तथा सामाजिक स्थिति का समुचित ढंग से वर्णन मिलता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्राचीन भारतीयों में इतिहास की प्रति जागरूकता थी। उन्होंने ऐतिहासिक महत्व के विशाल साहित्य की रचना की जो उनकी योग्यता और इतिहास के प्रति सजगता का प्रमाण है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 वर्मा, लाल बहादुर, इतिहास के बारे में, इलाहाबाद प्रकाशन, 2000, पृष्ठ 6

2 डीकिंसन, लवेश, एन एसे ऑन दि सिविलाइजेशन ऑफ इंडिया, चीन एंड जापान, पृष्ठ 5

3 पांडेय, गोविंद चंद, पृष्ठ 48

4 आचार्य दुर्ग, निरुक्त भाष्य वृत्ति

5 प्रकाश, बौद्ध, इतिहास दर्शन, हिंदी समिति, 1962, पृष्ठ 68

6 पांडेय गोविंद चंद, पृष्ठ 1

7 वर्मा लाल बहादुर, पृष्ठ 7

8 चौबे झारखंड, इतिहास दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1999 पृष्ठ 58

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 सितम्बर 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

9 अथर्ववेद, 15.1.7

10 विष्णु पुराण, 5.1.37

11 वही, 15.1.7

12 अथर्ववेद, 15.6.11

13 वही, 15.6.11

14 एंसिएंट इंडियन हिस्टोरिकल ट्रेडीशन, लंदन, 1922 और दि डायनेस्टी ऑफ़ द कालि एज, ऑक्सफोर्ड, पृष्ठ 1913

15 गुप्ता मानिकलाल, इतिहास, स्वरूप, अवधारणाएं एवं उपयोगिता, एटलांटिक पब्लिशर, 2002, पृष्ठ 18

16 वही, पृष्ठ 19

17 दांडेकर आर.एन. दि स्पिरिट ऑफ़ हिंदूज्म, पृष्ठ 9

18 श्रीवास्तव के.सी., प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 15वां प्रकाशन, 2019, पृष्ठ 221

19 अर्थशास्त्र, 15.13

20 श्रीधरन ई. इतिहास लेख, ओरिएंट ब्लैकस्टोन प्राइवेट लिमिटेड, 2011, पृष्ठ 88

21 पाठक वी.एस., एंसिएंट हिस्टोरियन ऑफ इंडिया, पृष्ठ 32

22 श्रीधरन ई., पृष्ठ 297

23 खुराना के.एल. और बंसल आर.के., इतिहास लेखन, धारणाएं तथा पद्धतियां, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2004, पृष्ठ 119

24 मजूमदार आर.के., हिस्टोरियन ऑफ़ इंडिया, पाकिस्तान एंड सीलोन, पृष्ठ 169

25ण्डिकिंसनए लविशए प्रण्15ण्

26 कीथ ए. बी., हिस्ट्री ऑफ़ संस्कृत लिटरेचर, पृष्ठ 144

27 खुराना के.एल. और बंसल आर.के., पृष्ठ 111